http://www.rtuonline.com

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र (प्राचीन काव्य)

Time allowed : Three hours **Maximum Marks : 100**

1. निम्नलिखित पद्यावतरणो को सप्रसंग व्याख्या कीजिये:

(क) माया तरवर त्रिविधि का, साखा दुख संताप।
सीतलता सुपिनै नहीं, फल फीकी तनि ताप।।
त्रिष्णाँ सीची नाँ बुझै, दिन–दिन बढ़ती जाइ।
जवासा के रूष ज्यूं, घण मेहाँ कुमिलाइ।।
माना की झल जन जल्या, कनक काँमनीं लागि।
कहुँ धौं किहि विधि राखिये, रुई पलेटी आगि।।

अथवा

ढोला, मिलिसि म बीसरिसि, नवि आविसि नालेसि।
मारू तणइ ककंडई, वाइस ऊडावेसि।।
हियडइ भीतर पइसि करि, ऊगउ सज्जण रूँख।
नित सूकइ नित पल्हवइ, नित नित निवला दूख।।
अकथ कहानी प्रेम की, किणसूँ कही न जाइ।
गूँगा का सुपना भया, सुमर सुमर पिछताइ।।

(ख) ते नर नररूप जीवत भव–भंजन–पद–विमुख अमागी।
निसिबासर रुचि पाप, असुचि मन, खलमति मलिन, निगमपथ त्यागी।।
नहिं सतसंग, भजन नहिं हरि को स्रवन न राम–कथा अनुरागी।
सुत–बित–दार–भवन–ममता–निसि सोवत अति, न कबहुँ मति जागी।।
तुलसिदास हरिनाम–सुधा तजि, सठ, हठि पियत विषय–विष माँगी।
सूकर–स्वान–सृगाल–सरिस जन, जनमत जगत जननि–दुख लागी।।

अथवा

पाट महादेइ! हिये न हारू। समुझि जीउ,चित चेतु संभारू।।
भौर कंवल संग होई मेरावा। संवरि नेह मालति पहं आवा।।
पपिहै स्वाति सौं जस प्रीति। टेकु पियास, बांधु मन भीती।।
धरतिहि जैस गगन सौं नेहा। पलटि आव बरषा ऋतु मेहा।।
पुनि वसंत ऋतु आव नवेली। सो रस, सो मधुकर, सो बेली।।
जिनि अस जीव करसि तू बारी। यह तरिवर पुनि उठिहि संवारी।।
दिन दस बिनु जल सुखि विधंसा। पुनि सोइ सरवर, सोइ हंसा।।
मिलहिं जो बिछुरे साजन, अंकम भेंटि अहंत।
तपनि मृगसिरा जे सहैं, ते अद्रा पलुहंत।।

(ग) हरि–मुख–विधु मेरी अखियाँ चकोरी।
राखे रहति ओटपट जतननि, तऊ न मानतिं कितिक निहोरी।।
बरबस ही इन गही मूढ़ता, प्रीति जाइ चंचल सौं जोरी।
बिबस भई चाहतिं उड़ि लागन, अटकतिं नैकु अँजन की डोरी।।
बरबसही इन गही चपलता, करत फिरत हमहूँ सौं चोरी।

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

'सूरदास' प्रभु मोहन नागर, बरषि सुधा–रस–सिंधु झकोरी।।

अथवा

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरी को जो धर्‌यो कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिन्दी कूल कदंब की डारन।

2 "कबीर मध्यकाल के क्रान्तिपुरुष थे।" इस कथन की सत्यता पर प्रकाश डालते हुए कबीर की प्रासंगिकता पर विचार कीजियें।

अथवा

"भावगाम्भीर्य, अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति, मधुरता और सहजता दादू के काव्य की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं।' इस कथन के आलोक में दादूदयाल के काव्य सौन्दर्य का सोदाहरण विवेचन कीजिये।

3. "भक्ति साहित्य में तुलसीदास हिन्दी के सर्वोत्तम कवि हैं।" इस कथन की विवेचना कीजिये। http://www.rtuonline.com

अथवा

"जायसी का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।' इस कथन को जायसी के विरह वर्णन के आधार पर स्पष्ट कीजिये।

4. "सूरदास का काव्य वात्सल्य, शृंगार और भक्ति की त्रिवेणी है।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये।

अथवा

मीरा के काव्य में मिलन–सुख और विरह वेदना का जो चित्रण हुआ है, उस पर सोदाहरण प्रकाश डालिये।

5. (क) काव्य–गुण की परिभाषा देते हुए प्रमुख काव्य–गुणों का परिचय दीजिये।

अथवा

रीति की परिभाषा बताते हुए रीति के प्रमुख प्रकारों का परिचय दीजिये।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्य–दोषों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिये।

(1) श्रुति कटुत्व (2) अक्रमत्व
(3) क्लिष्टत्व (4) ग्राम्यत्व

अथवा

निम्नलिखित काव्य–छंदों में से किन्हीं दो का लक्षण स्पष्ट करते हुए उदाहरण प्रस्तुत कीजिये।

(1) दोहा (2) चौपाई
(3) सवैया (4) कवित्त

http://www.rtuonline.com
http://www.rtuonline.com